पाठ-2 हिन्दी भाषा और प्रौद्योगिकी

(1) इंटरनेट पर हिन्दी

(भूमिका →) वर्तमान युग में कम्प्यूटर के बिना आधुनिक जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती और इसमें इंटरनेट का योगदान बहुत बड़ा है।

→ इंटरनेट आधुनिक और उच्च तकनीकी विज्ञान का आविष्कार है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानकारी (संदेश) वस्तु के आदान प्रदान की आश्चर्यजनक सुविधा उपलब्ध कराता है।

→ यह जानकारियों का एक बड़ा समूह है।

→ इंटरनेट यह जानकारी किसी भी कम्प्यूटर या डिजीटल डिवाइस (यंत्र) जैसे टैबलेट, मोबाइल, पीसी पर भेज सकते हैं।

→ इसमें लाखों वेबसाइट होती है जिस पर घरेलू, व्यापारिक, शैक्षिक और सरकारी आदि जानकारी ले सकते है।

→ इंटरनेट को नेटवर्कों का नेटवर्क कह सकते हैं।

→ इंटरनेट का उपयोग हम - ईमेल, संदेश, ऑनलाइन बात करने के लिए, फाइल स्थानांतरण करने के लिए, वर्ल्ड वाइड वेब के द्वारा वेब पेजो और दूसरे दस्तावेजों को प्राप्त करना।

Scanned by TapScanner

→ अपनी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, ये हर जगह इस्तेमाल होता है जैसे कार्यस्थल, स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्रों पर, दुकान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट, मॉल और खासतौर पर एक ही घर में इसके अलग-अलग उद्देश्य से प्रयोग।

→ इंटरनेट से जुड़ने के लिए एक टेलीफोन कनेक्शन, एक कम्प्यूटर और मॉडम की जरूरत होती है।

→ इंटरनेट दुनिया के किसी भी कोने से पूरे विश्वभर की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त करने में हमारी मदद करता है। इसके द्वारा वेबसाइट से कुछ सेकेंडो में ही जानकारी इकट्ठा भी कर सकते है और भविष्य के लिए सुरक्षित भी रख सकते हैं।

→ विडियो कॉन्फ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजूद लोग एक-दूसरे से जुड़ सकते है।

→ इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षाएँ, प्रोजेक्ट तथा अन्य रचनात्मक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

→ इसके इस्तेमाल से हमलोग कहीं से भी वर्ल्ड वाइड वेब तक पहुँच सकते हैं। जैसे ई-मेल, सर्फिंग सर्च इंजन, सोशल मीडिया के द्वारा बड़ी हस्तियों से जुड़ना, वेब पोर्टल तक पहुँच, शिक्षाप्रद वेबसाइटों को खोलना,

रोजगारों की सूचनाओं से अवगत रहना, विडियो बातचीत आदि। वर्तमान समय में अधिकांश लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं इसलिए हमें इसके फायदे नुकसान दोनों के बारे में भी ध्यान रखना चाहिए।

विद्यार्थियों के लिए इसके जितने लाभ हैं वहीं गलत इस्तेमाल से यही इंटरनेट उनके लिए नुकसानदायक भी बन जाता है। माता-पिता से चोरी-छिपे बच्चे गलत वेबसाइटों का प्रयोग करते हैं जिससे उनकी ज़िंदगी दिशाहीन हो सकती है। कम्प्यूटर में पासवर्ड डालने के बावजूद डाउनलोड करने के दौरान कम्प्यूटर में वाइरस, मालवेयर, स्पाइवेयर और दूसरे गलत प्रोग्राम आ जाने से इंटरनेट के द्वारा हैक कर लिया जाता है। इसके बावजूद इंटरनेट के फायदे बहुत हैं। इस वैश्विक नेटवर्क से पूरी दुनिया को जोड़ना आसान हो गया है। पुराने समय में संचार पत्र के माध्यम से होता था जो बहुत लंबा समय लेने वाला और कठिन होता था और वही काम ई-मेल, चैट आदि अपलोड के द्वारा सेकेंडों में हो जाता है। मेट्रो, रेलवे, व्यापारिक फर्मों, उद्योग-धंधे, दुकान, स्कूल, कॉलेज, अन्य शिक्षण संस्थान, एन जी ओ, विश्वविद्यालय, कार्यालय आदि में हर डाटा को कम्प्यूटरीकृत करके बड़े स्तर पर कागज और कागजी कार्यों से बचा जा सकता है। इसके द्वारा ऑनलाइन पब्लिक लाइब्रेरी, टेक्स्ट बुक, तथा सम्बन्धित किताबों तक पहुँच आसान हुई है। इंटरनेट से समय की बचत होती है जिसे रेलवे टिकट के लिए लंबी-लंबी लाइनों में खड़े रहना पड़ता था आज इंटरनेट से एक क्लिक से घर बैठे टिकट की बुकिंग हो जाती है। इंटरनेट ने दूरियों को भी कम किया है। व्यापारिक मुलाकात या मीटिंग और काम के लिए विडियो कॉन्फ्रेंसिंग, कॉलिंग, स्काईप या दूसरे तरीकों से अपनी जगह पर रहकर ही बैठक का हिस्सा बन सकता है। इंटरनेट से और भी कई फायदे हैं। जैसे ऑनलाइन स्कूल,

कॉलेज या विश्वविद्यालयों में दाखिला दिलाने में, व्यापारिक और बैंकिंग लेन-देन में, शिक्षकों और कर्मचारियों की ~~[illegible]~~ नियुक्ति में, ड्राइविंग लाइसेंस, आवेदन करने में, बिल जमा करने आदि में मदद करता है।

इंटरनेट पर हिन्दी की दशा और दिशा

तीसरी तकनीकी क्रांति (1980) के बाद इंटरनेट सूचनाओं के आदान-प्रदान का सबसे सुलभ और उपयोगी साधन बन चुका है। एक अरब तीस करोड़ आबादी वाले भारत देश में हिन्दी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। देश की 70% आबादी इसी भाषा में अपने को अभिव्यक्त करती है। आज ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद आदि देशों हिन्दी बोलने वालों की संख्या काफी ज्यादा है जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए संतोषजनक बात है। विकसित देश भी हिन्दी की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने उत्पाद बेचने के लिए आम आदमी तक पहुँचना होता है और इसके लिए जनभाषा ही सबसे सशक्त माध्यम है। हिन्दी भाषी उपभोक्ताओं ने ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत के रूप में एक बड़ा बाजार उपलब्ध करवाया है। विश्व के लगभग एक सौ चालीस देशों तक हिन्दी किसी न किसी रूप में पहुँच चुकी है।

सन् 2000 में जब हिन्दी का पहला वेब पोर्टल अस्तित्व में आया तभी से इंटरनेट पर हिन्दी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारंभ कर दी थी। नई पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी ने भी इसकी उपयोगिता को समझ लिया है।

(1) इंटरनेट ने हिन्दी को प्रकाशकों के चंगुल से मुक्त कराने में बड़ा योगदान दिया है। मुक्तिबोध, त्रिलोचन जैसे हिन्दी के महत्वपूर्ण कवियों को प्रकाशित करना प्रकाशकों की इच्छा पर निर्भर करता था जिससे ये कवि उपेक्षित रह जाते थे। इंटरनेट ने बिना किसी भेदभाव के इन कवियों को उपलब्ध करवाता है जिससे पाठकवर्ग को लाभ पहुँचता है।

(2) कम्प्यूटर पर काम रोमन लिपि में होता था। ~~इंटरनेट~~ के फॉण्ट की समस्याओं से जूझते हुए इंटरनेट धीरे-धीरे देवनागरी लिपि तक पहुँच चुका है। यूनीकोड, मंगल जैसे यूनीवर्सल फॉण्टों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया है। आज इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य से संबंधित लगभग सत्तर ई-पत्रिकाएँ देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं।

(3) इंटरनेट पर प्रवासी भारतीय साहित्यप्रेमी लोगों की पैठ ने भी हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा दिया है। संयुक्त अरब अमीरात में रहनेवाली प्रवासी भारतीय पूर्णिमा वर्मन 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' नामक ई-पत्रिका की संपादक है। अभिव्यक्ति हिन्दी की पहली ई-पत्रिका है जिसके आज तीस हजार से भी अधिक ~~संख्या~~ पाठक हैं। अभिव्यक्ति की तरह ही 'अनुभूति' 'रचनाकार', 'हिन्दी नेस्ट', 'कविताकोश', 'संवाद' आदि ई-पत्रिकाएँ इंटरनेट पर अपनी छटा बिखेर रही हैं। इनकी बढ़ती पैठ को देखते हुए ही हिन्दी के प्रकाशकों और संपादकों ने अपनी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के ई-संस्करण इंटरनेट पर जारी किए हैं। हंस, कथादेश, तद्भव, नया ज्ञानोदय जैसी न जाने कितनी महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ आज इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। सभी प्रतिष्ठित अखबारों के ई-संस्करण भी इंटरनेट पर पाठक पढ़ सकता है।

(4) इंटरनेट पर हिन्दी की दशा को दिखाने वाला एक रूप 'ब्लॉग' भी है। आजकल अपने विचारों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए 'ब्लॉग' एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है जो हर समय ब्लॉगर और पाठक दोनों के लिए उपलब्ध है। इंटरनेट पर हिन्दी में पहला ब्लॉग बनाने वाले ब्लॉगर आलोक कुमार हैं जिन्होंने 'नौ-दो-ग्यारह' नाम का ब्लॉग बनाया। आज हिन्दी में ब्लॉगो की संख्या भी लाखों में है और इस पर सक्रिय लोगों की संख्या भी हजारों में है। इंटरनेट पर पहली बार 'चिट्ठा' शब्द का इस्तेमाल ~~किया~~ भी आलोक कुमार ने ही किया था।

(5) इंटरनेट पर हिन्दी साहित्यिक सीमाओं को लांघकर अपना प्रसार कर रही है, वह कहानी, उपन्यास, नाटक से आगे बढ़कर महापुरुषों की जीवनियों, चिकित्सा, विज्ञान के क्षेत्र में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है। इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी वेबसाइट बना रखी है जिन पर अनेक रचनाकारों की पुस्तकें अपने आकार रुचि के साथ ~~आसान~~ चुनाव कर सकता है।

(6) हिन्दी को इंटरनेट friendly बनाने में 'अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' (वर्धा) का बहुत सराहनीय योगदान रहा है। इसकी वेबसाइट www.hindisamay.com पर हिन्दी के लगभग एक हजार रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास आदि की ग्रंथावलियों के साथ-साथ समकालीन रचनाकारों की रचनाओं का लाभ भी पाठक उठा सकता है, कह सकते हैं कि वर्धा विश्वविद्यालय ने ~~इसको~~ हिन्दीप्रेमियों, शिक्षकों, शोधार्थियों के लिए एक चलता फिरता पुस्तकालय मुहैया करवाया है।

(7) आज सभी आवश्यक क्षेत्रों की वेबसाइटों के हिन्दी संस्करण मौजूद हैं। पूंजी बाजार, नियामक सेबी, बी एस ई, भारतीय जीवन बीमा निगम, सभी सरकारी और गैर सरकारी बैंकों की वेबसाइटें हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। भारतीय अंतरिक्ष

अनुसंधान संगठन (इसरो) की वेबसाइट भी हिन्दी में है। जुलाई 2009 में दिया गया रिजर्व बैंक का निर्देश भी महत्वपूर्ण है कि हिंदी में लिखे पत्रों का जवाब हिन्दी में दिया जाना चाहिए। इस तरह के प्रयासों से हिन्दी का इलेक्ट्रॉनिक प्रसार और उपलब्धि बढ़ी है।

(8) राजभाषा अधिनियम 1976(5) के तहत केन्द्र सरकार ने हिन्दीभाषी क्षेत्रों की सभी सरकारी उपक्रमों में हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में प्रयुक्त करने के निर्देश दिए हैं। हिन्दी में जितना काम बढ़ेगा इतना ही हिन्दी आजीविका के अवसर प्रदान करेगी और हिन्दी के प्रति लोगों की रुचि भी बढ़ेगी। यह काम इंटरनेट पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी की वेबसाइटें बखूबी कर रही हैं।

(9) आज हिन्दी के प्रन्टर सैकसच भाषिक इंजन हैं जो किसी भी वेबसाइट को चंद मिनटों में हिन्दी अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। याहू, गूगल, और फेसबुक भी हिन्दी में उपलब्ध हैं।

* अब हिन्दी कम्प्यूटर से निकलकर मोबाइल में भी पहुँच गई है जिसके कारण देवनागरी लिपि के समक्ष खड़ी चुनौती भी काफी हद तक कम हो रही है। कुछ समय पहले तक रोमन लिपि में ही हिन्दी लिखी जाती थी लेकिन अब काफी लोग हिन्दी को देवनागरी लिपि में लिखने का प्रयास करते हैं।

(10) इंटरनेट पर हिन्दी की दशा को सुधारने में 'ट्विटर' का भी बहुत योगदान है। इन ट्विटरों में हिन्दी का जबरदस्त प्रयोग हो रहा है। प्रोफेसर, डॉक्टर, अभिनेता, नेता, सामाजिक कार्यकर्ता आदि ट्विटर का प्रयोग करते हैं। उन्हीं की देखा देखी अब अन्य लोग भी ट्विट करने लगे हैं इससे हिन्दी के लिए नई सम्भावनाएँ पैदा होंगी

(11) इंटरनेट ने हिन्दी की उपस्थिति दो ऐसे स्थानों पर दर्ज करवायी है जहाँ पहले केवल अंग्रेजी का ही प्रयोग होता था। डीटीएच और क्रिकेट के

स्कोर बोर्ड पर। हिन्दी क्योंकि आमजन की भाषा है इसलिए टी.वी. के अधिकांश चैनल हिन्दी में और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हो रहे हैं। पहले क्रिकेट की कमेंट्री का हिन्दी में वाचन एक निश्चित समय के लिए होता है लेकिन आज हम पूरी कमेंट्री हिन्दी में सुन सकते हैं। इसके साथ ही डिसकवरी, नेशनल ज्योग्राफिक और एनिमल प्लानेट जैसे इंगलिश चैनल भी हिन्दी में दर्शकों का ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं।

आनेवाला समय हिन्दी का है। इंटरनेट पर आज न तो हिन्दी की सामग्री की कमी है और न ही पाठकों की। हां, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अभी और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है जिससे इसकी पहुँच आमजन तक हो सके। हिन्दी का एक मजबूत पक्ष है यह भी है कि यह बाजार की भाषा बन चुकी है, यह भी सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी किसी भी उच्च-भू तकनीक के अनुकूल है। हिन्दी के कुछ प्रबुद्ध वर्ग के अनुसार इंटरनेट शब्द और अतः किताब के लिए खतरा है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि पुस्तकों के पाठकों की संख्या में आई गिरावट के इस दौर में इंटरनेट ने एक नया पाठकवर्ग तैयार किया है। किताब का जो वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है, उसने किताब की अपनी स्वायत्त सत्ता होती है। इंटरनेट पर भविष्य में नई विधाएँ भी जन्म ले सकती हैं। इस प्रकार इंटरनेट-साहित्य किताब की परिभाषा में कुछ नया ही जोड़ता है।

है।

गी
नहीं